सूरदास
का जीवन परिचय
www.theenotes.com

# सूरदास का जीवन परिचय (संक्षिप्त परिचय)

| | | |
|---|---|---|
| कवि का नाम | : | सूरदास |
| उपनाम | : | मदन-मोहन |
| पिता का नाम | : | रामदास |
| माता का नाम | : | जमुनादास |

| | | |
|---|---|---|
| जन्म-स्थान | : | रुनकता या सीही |
| जन्म | : | सन् 1478 ई. |
| मृत्यु | : | सन् 1583 ई. |
| गुरु | : | महाप्रभु बल्लभाचार्य |
| प्रमुख रचनाएँ | : | 1. सूरसागर |
| | : | 2. सूर-सारावली |
| | : | 3. साहित्य लहरी |
| भाषा | : | ब्रज भाषा |
| जन्म काल | : | भक्तिकाल |

## सूरदास जी की प्रमुख रचनाएं

1. सूरसागर
2. सूर सारावली
3. साहित्य लहरी

आदि.....

सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ ll
Surdas ki Kavygat
Vieshtayen

# सूरदास के काव्यगत विशेषताएं

**भाव पक्ष :-** भक्ति भावना

वात्सल्य चित्रण

श्रृंगार वर्णन

प्रकृति चित्रण

भावुकता एवं वाग्वैदग्ध्यता

अलौकिकता एवं मौलिकता

एक बार जरूर से देखें।

कृतियाँ – सूरदास की कीर्ति का मुख्य आधार उनका **'सूरसागर'** ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त **'सूरसारावली'** और **'साहित्य लहरी'** भी उनकी रचनाएँ मानी जाती हैं, यद्यपि कतिपय विद्वानों ने इनकी प्रामाणिकता में सन्देह प्रकट किया है। 'सूरसागर' में श्रीमद्भागवत' के दशम स्कन्ध की कृष्णलीलाओं का विविध भाव-भंगिमाओं में गायन किया गया है।

**काव्यगत विशेषताएँ**

**भावपक्ष की विशेषताएँ**

**भगवान् के लोकरंजक रूप का चित्रण** – सूरदास ने भगवान् के लोकरंजक (संसार को आनन्दित करने वाले) रूप को लेकर उनकी लीलाओं का गायन किया है। तुलसी के समान उनका उद्देश्य संसार को उपदेश देना नहीं, अपितु उसे कृष्ण की मनोहारिणी लीलाओं के रस में डुबोना था। वल्लभाचार्य जी के शिष्य बनने से पहले। सूर विनय के पद गाया करते थे, जिनमें दास्य भाव की प्रधानता थी। इनमें अपनी दीनता और भगवान् की महत्ता : का वर्णन रहता था ।
**(क)** मो सम कौन कुटिल खल कामी।
**(ख)** हरि मैं सब पतितन को राऊ।
किन्तु पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के उपरान्त सूर ने विनय के पद गाने के स्थान पर कृष्ण की बाल्यावस्था और किशोरावस्था की लीलाओं को बड़ा हृदयहारी गायन किया।

**वात्सल्य वर्णन**
सूरदास का काव्य-क्षेत्र मुख्य रूप से वात्सल्य और श्रृंगार, इन दो रसों तक ही सिमटकर रह गया। पर इस सीमित क्षेत्र में भी सूरदास की प्रतिभा ने जो कमाल किया, वह बेजोड़ है। इन क्षेत्रों का कोना-कोना वे झाँक आये कि काव्यशास्त्र के पंडितों को वात्सल्य को एक स्वतन्त्र रस की मान्यता देनी ही पड़ी।

**(1) वात्सल्य का संयोग पक्ष** – वात्सल्य रस का जैसा सरस और विशद वर्णन सूर ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। पुत्र को पालने में झुलाना और उसे लोरियाँ गाकर सुलाना मातृजीवन की सहज अभिलाषा होती है। इसके अतिरिक्त बालक की बाह्य चेष्टाओं और क्रियाओं, उनकी मनोवैज्ञानिक चपलताओं का सुन्दर अंकन तथा माता-पिता को उन पर बलिहारी होना आदि के चित्रण द्वारा उन्होंने वात्सल्य के संयोग पक्ष को परिपुष्ट किया है। इसका संक्षिप्त विवेचन निम्नवत् है